रिकॉर्ड॰ अरिवर वो दिन आया आज ••• ओम शान्ति॰ प्रातः क्लास 11-6-67

बच्चों ने गीत सुना। आखिर वो दिन आया विश्व पर शान्ति॰ का समय आया। सब कहते है कि विश्व पर शान्ति, कैसे हो? फिर जो राय देते है उनको ईनाम देते है। नेहरू भी राय देते थे। शान्ति॰ तो हुई नहीं, सिर्फ राय ही देकर गये। अब तुम बच्चों की बुधी मे है कि किसी समय सृष्टी मे सुख शान्ति पवित्रता सब थी। वो अभी नही है। अब फिर होने वाली है। चक्र तो फिरना है ना। यह तो संगम युगी ब्राह्मणों की बुधी मे है। कलयुगी मनुष्यों की बुधी मे नही है। उन सबकी बुधी मे है लोहा और तांबा। तुम्हारी बुधी मे है सोना। तुम जानते हो कि भारत फिर से सोने का बनना है। भारत को ही गोल्डन बर्ड कहा जाता था। भले महिमा तो करते है परन्तु सिर्फ कहने मात्र। तुम तो अभी प्रैक्टीकली पुरुषार्थ कर रहे हो। तुम जानते हो कि बाकी थोडे रोज है कि सारी नर्क की बातें भूल जावेंगे। दुःख की बातें भूल जावेंगे। तुम्हारी बुधी मे अब सुख के दिन सामने खडे है। जैसे आगे विलायत से आते थे तो समझते थे कि अब बाकी थोडा समय है पहुंचने मे। क्योंकि आगे तो विलायत से आने मे बहुत समय लगता था। अब तो एरोप्लेन मे जल्दी पहुंच जाते है। अभी तुम बच्चे जानते हो कि और तुम्हारी बुधी मे है कि अब हमारे सुख के दिन आते है जिसके लिये ही हम पुरुषार्थ कर रहे है। बाबा ने पुरुषार्थ भी बहुत सहज बताया है ड्रामा अनुसार कल्प पहले मुआफिक। यह तो रटन है कि तुम देवता थे। देवताओं के कितने ढेर के ढेर मन्दिर बन रहे है। बच्चे जानते है कि मन्दिर आद फिर टूट जाते है। बनते ही जावेंगे जब तक कि यह पता पडे कि यह महाभारत की लडाई है। यह मन्दिर आद सब टूट जावेंगे। यह जब समझेंगे तब बनाना बन्द करेंगे। अभी तो तुम्हारे सिवाय कोई को भी पता नही है। तुम जानते हो कि यह मन्दिर आद बना कर क्या करेंगे। थोडी दिन कितने है। तुम बच्चे नॉलेज ले रहे हो। वो उसकी अथारटी है। कहा भी जाता है परमपिता परमात्मा सच्चिदानन्द आलमाईटी अथारटी ज्ञान है। तुम ज्ञान की अथारटी हो। वो है भक्ति की अथारटी। ज्ञान की अथारटी बाप को कहा जाता है आलमाईटी अथारटी। तुम बच्चे नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार बन रहे हो। तुमको सृष्टी की आद मध्य अन्त का ज्ञान है। जानते हो कि हम पुरुषार्थ कर रहे है। रूप से बदल रहे है। वो भक्ति की अथारटी है तो सब को भक्ति ही सुनाते है। तुम ज्ञान की अथारटी हो तो ज्ञान ही सुनाना है। अब भक्ति मुर्दाबाद ज्ञान जिन्दाबाद हो रहा है। यह और तुम निश्चय से कह सकते हो। सतयुग मे भक्ति होती नहीं है। पुजारी एक भी होते नही है। पुज्य ही पुज्य है। आधा कल्प है पुज्य। आधा कल्प है पुजारी। भारतवासियों के लिये ही है। पुज्य थे तो स्वर्ग था। अब भारत पुजारी नर्क है। तुम बच्चे अब मिरेकल लाईफ बना रहे हो नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। सभी को समझाते रहते हो। और दूसरों को पढाते रहते हो। ड्रामा मे पहले से ही नूंध थी। ड्रामा ही तुमको कराते रहते है। तुम करते रहते हो। जानते हो कि ड्रामा मे हमारा अविनाशी पार्ट है। दुनियां इन बातों को क्या जाने। हमारा ही ड्रामा मे पार्ट है। जो करेंगे वो ही समझेंगे कि कैसे हमारा इस ड्रामा मे पार्ट है। यह सृष्टी का चक्र फिरता ही रहता है। यह वर्ल्ड की हिस्ट्री जाग्राफी तुम्हारे सिवा कोई को पता नही है। ऊंच ते ऊंच कौन है दुनियां से कोई नही जानते है। ऋषी मुनी आद भी कहते थे कि हम नही जानते है। नेति-2 कहते थे न। अब तुम बच्चे तो जानते ही हो। वो रचता बाप है और हमको पढा रहे है। वो तो सिर्फ पूछते है कि रचयिता को जानते हो? तो कह देते है नेति-2। तुमको तो फिर पढा रहे है। यह भी बाबा ने बार-2 समझाया है कि यहां पर जब भी बैठते हो तो देहीअभिमानी बन कर बैठो। एक बाप है राजयोग सिखाते है। और वर्ल्ड की हिस्ट्री जाग्राफी सुनाते है। वो ही नालेजफुल है ना। जानीजाननहार का यह मतलब नही है कि वो हमारे अन्दर को जानते है। बाप कहते है कि मै कोई थाट रिडर नही हूं। इतनी बडी दुनियां है किसके-2 बैठ कर रीड करूंगा मै तो आता हूं पावन बनाने। ड्रामा मे जो मेरा पार्ट है वो ही बजाता हूं। अभी मै कोई रिड आद नही करता हूं। जानता हूं कि मेरा क्या पार्ट है और तुम्हारा क्या

पींट है और क्या करते रहे हो। तुम यह नालेज लीख कर और लिखते रहते हो। मेरा तो पींट ही है पतितों को पावन बनाना। यह भी तुम ही जानते हो। तुम तो तिथी तारिख आद सब कुछ जानते हो। दुनियां मे कोई थोडे जानते है। तुमको बाप सिखा रहे है। फिर जब यह चक्र पुरा करेंगे फिर बाप आवेंगे। इस समय जो सीन चल रहा है वो फिर कल्प बाद चलेगा। एक सैकिड नही मिल सकते है। यह नाटक फिरता ही रहता है। तुम बच्चो को बेहद के नाटक का पता है। फिर भी तुम बार-2 भूल जाते हो। बाप कहते है कि तुम सिर्फ याद करो कि हमारा बाबा-2 है। वो ही टीचर भी है। गुरु है। तुम्हारी बुधी उस तरफ चली जानी चाहिये। आत्मा खुश होती है बाप की महिमा सुन कर। सब कहते है हमारा बाबा-2 है। टीचर है। वो पतित पावन सतगुरु है। वो सच्चा ही सच्चा है। पढाई भी सच्ची और पुरी है। उन मनुष्यों की पढाई तो अधुरी है। तो तुम बच्चो की बुधी मे कितनी खुशी होनी चाहिये। बडी परिक्षा पास करने वालो की बुधी मे जास्ती खुशी रहती है। तुम कितना ऊंचा पढते हो। तो कितनी जास्ती खुशी होनी चाहिये। भगवान बाबा, बेहद का बाप हमको पढा रहे है। तुम्हारे तो रोमांच खडे हो जाने चाहिये। यह जो ही रिपीसोड रिपिट हो रहा है। सिवाय तुम्हारे किसीको भी पता नही है। कल्प की आयु बढा दी है। तुम्हारी बुधी मे अबसारी 5000 वर्ष की स्टोरी चक्र खाती रहती है। जिसको ही स्वदर्शनचक्रधारी कहा जाता है। सिर्फ बच्चे कहते है कि बाबा तूफान बहुत आते है। हम भूल जाते है। बाबा कहते है कि तुम किनको भूल जाते हो? बाप जो तुमको डबल सिरताज विश्व का मालिक बनाते है उनको तुम कैसे भूलते हो? दूसरे किसीको नही भूलते हो। स्त्री बाल बच्चे काका चाचा आदि सभी याद है। बाकी इसी बाप को भूल जाते हो। तुम्हारी यह दस याद मे है। जितना भी हो सके याद करना है। यहां पर आकर बैठने की भी आदत नही डालनी है। आज सुना कि बच्चे सवेरे उठ कर यहां हाल मे आकर बैठे थे। बाबा अगर होते तो ऊपर छत पर वा बाहर की ठण्डी-2 हवा मे चले जाते2 यहां ही आकर बैठने की कोई जरुरी नही है। बाहर भी जा सकते हो। सवेरे के समय कोई डर आद की भी बात नही रहती है। बाहर मे जाकर पैदल भी करो। आपस मे यही बातें करते रहो कि देखते है कि बाबा को कौन जास्ती याद करता है। फिर बताना चाहिये कि कितना समय हमने याद किया। बाकी समय हमारी बुधी कहां गई। इसको ही कहा जाता है एक दो को ऊंचा उठाना। नोट करो कि कितना समय बाप को याद किया। बाबा की जो प्रैक्टिस है वो बताते है। याद से तुम एक घण्टा भी पैदल करो तो तुम थकेंगे नही। याद से तुम्हारे कितने पाप कट जावेंगे। चक्र के तो तुम जानते हो रात दिन तुम्हारी बुधी मे है कि अबहम घर जावेंगे। पुरुषार्थ करते है। कलयुगी मनुष्यों को तो जरा भी पता नही है। मुक्ति के लिये कितनी भक्ति करते रहते है। कोई किनको जपेंगे कोई किसको। अनेको मत है। तुम ब्राह्मणों की है ही एक मत। जो ब्राह्मण बनते है उन सबकी है श्रीमत तुम बाप की श्रीमत से देवता बनते हो। देवताओं की कोई श्रीमत नही है। श्रीमत अभी ही तुम ब्राह्मणे को मिलती है। भगवान है ही निराकार। कृष्ण का नाम डालने से इस बडी भूल से कितनी खराब अवस्था

बाप सुना

हो गई है। वो है गीता पढते-2 नचे उतरते। अब वो ही गीता सम्मुख बैठ कर राजयोग सिखा रहे है। जिससे ही तुम अपना राज्यभाग लेकर कितने ऊंच विश्व का मालिक बनते हो। भक्ति मार्ग के शास्त्र कितने ढेर के ढेर है परन्तु काम का शास्त्र तो एक गीता ही है। भगवान आकर राजयोग सिखा रहे है उसको ही गीता कहा जाता है। अब तुम बाप से पढते हो जिनसे ही स्वर्ग का राज्य पाते हो। फिर जिसने पढा उसने लिया। ड्रामा मे पींट है ना। जो यहां आते जावेंगे उनका गीता रामायण आद पढना सब बन्द हो जावेगा। तुम समझते हो कि वो सब है भक्ति। अब ज्ञान सुनाने वाला ज्ञानसागर एक ही बाप है। वो ड्रामा प्लान अनुसार कलयुग के अन्त और सतयुग की आदि के संगम पर आते है। कोई भी बात मे मुंझो नही। तुम बच्चे ही जानते हो कि बाप इसमे आकर पढाते है। और कोई यह पढा नही सकते। [illegible] अगर कोई [illegible] तो [illegible] हो। बाप कहते है अब इन

गुरुओं आद को मुक्ति देनेवाले अवतार छिटे। इन सबका भी उद्धार मुझे ही करना है। गीता मे तो सिर्फ लिखवा है कि इन साधुओं आद का उद्धार करने मै आता हूं। इसका अर्थ कब कोई को बतायेंगे नही। अब तो बहुत क्लीयर है। साधु आद सबका मे उद्धार करता हूं। साधु समाज भी है नां। वास्तव मे तो साधुओं का प्रेजीडण्ट भी साधु सन्यासी ही होना चाहिये। परन्तु अभी तो देखो उनका प्रेजीडण्ट बना है साधु(नन्दा) वो साधु वो फिर कुछ वायुगड़-यह भी ड्रामा में नूंध है। हम कोई से नफरत नही करते हैं। यह तो समझाया जाता है। भगवानुवाच कि यह आसुरी सम्प्रदाय है। तुमको भी कहते है कि तुम बड़े रैम्प्य थे नां। विद्वान आद भी आते है। यह(दादा(भी तो वस्त्राद आद पढ़ते थे नां।अब तुम बच्चों की ऐम आब्जेक्ट सामने खडी है। यह है ही नर से नारायण बनने की सत्य कथा। इनकी ही फिर भक्ति मार्ग मे महिमा चलती है। भक्ति मार्ग की रस्म चलती आती है। अभी तो यह रावण राज्य पुरा होना है।तुम अभी ऊपर आद मे चोडेंई जायेंगे। तुम तो समझेंगे कि अब यह क्या करते हैं? यह तो बेबीज का काम है। बड़े-2 आदमी देखने जाते है कि रावण को कैसे जलाते है। यह है कौन? कोई बता नही सकते। रावण राज्य है नां। राम राज्य भी यहां रावण राज्य भी यहां होता है। मनुष्यों की बुधी सारी मारी हुई है।राजाओं पास पैसे तो बहुत रहते है। दुशहरे आद मे कितनी खुशी मना मनाते है। जबसे रावण को जलाते आते है दुःख भी चला आता है। कुछ भी समझ नही। अब तो समझते हो कि हम भी कितने बेसमझ थे।दुनियां कितनी बेसमझ है।रावण बेसमझ बना देते है। अभी तुम कहते हो बाबा हम तो लक्ष्मी जरुर बनेंगे। हम कोई कम पुरुषार्थ थोडेही करेंगे। यही एक स्कूल है। पढाई बहुत सहज है। बुढ़ि-2 मातायें और कुछ नही याद कर सकती है तो बाप को याद करो। मुख से हाय राम तो कहती हो नां। बाबा भी बहुत सहज बताते है। तुम आत्मा हो परमात्मा बाप को याद करो। तुम्हारा बेडा पार हो जावेगा। कहां चले जावेंगे? शान्तिधाम सुखधाम। और सब कुछ भूल जाओ। जो सबकुछ पढा है वो सब कुछ भूल जाओ। बाप को याद करो तो बाप से वर्सा जरुर मिलेगा। बाप ही की याद से ही पाप कट जाते है।कितना सहज है। कहते भी है भृकुटी के बीच चमकता सितारा। तो जरुर इतनी छोटी आत्मा होगी। डाक्टर्स लोग बहुत कोशिशें करते है आत्मा को पकडने की। परन्तु वो तो बहुत सूक्ष्म है देख पकड़ नही सकते है। बाप भी वैसा ही बिन्दी है। कहते है कि जैसे तुम साधारण हो तो मै भी साधारण टीचर होकर तुमको पढाता हूं। किसको क्या पता कि इनको भगवान कैसे पढ़ाते होंगे। कृष्ण पढ़ाते हो तो अमरीका जापान सभी तरफों से इण्डिया मैं आ जावे इतनी तो उसमे कशिश है। कृष्ण के साथ प्यार तो सबका है नां। अभी तुम बच्चे जानते हो कि हम सो बन रहे है। कृष्ण है प्रिन्स। प्रिन्स तो सबको ही बनना है। कृष्ण को गोद मे लेना चाहते हो तो पुरुषार्थ करना पडे।कोई बडी बात नहीं है।स्वर्ग के प्रिन्स तो सब विश्व के मालिक है। अभी इसलिये ==== ही बाप पढाते है। बाप कहते है दुनियां की अब सब बाते छोडो। ऐसे कब नही समझो कि हमारे पास तो करोड़ है। लाख है। कुछ भी हाथ मे नही आवेगा। इसलिये अच्छी रीती पुरुषार्थ करो। बाप के पास आते है तो बाप उलहना देते है कि आठ मास से आते हो। और बाप जिससे ही स्वर्ग की बादशाही मिलती है उनसे इतना समय तक मिले भी नही हो? कहते है बाबा फलाना काम था। अरे अगरतुम मर जाते फिर यहां कैसे आते? यहां बहाना थोडेही चल सकेगा। बाप राजयोग सिखा रहे है औरतुम सीखते नही हो? जिसने बहुत भक्ति की है उसको सात दिन मे तो क्या एक सैकिंड़ मे तीर लग जा सकता है। सैकिंड़ मे विश्व का मालिक बन सकते है। यह रखुद बैठे है नां। विनाश दिखाया और चतुर्भुज का रुप दिखाया। बस। समझ लगी कि ओहो!—हम विश्व के मालिक बनते है? थूक डाले उस धन्धे आद को। यह तो कोई काम का नही है। सा0 हुआ और झट छोड दिया। यहां तुम बच्चों को ======= पड़ा है कि बाप आये है विश्व का मालिक बनाने। बाप पूछते है कि निश्चय आप को कब हुआ? तो कहते है आठ मास हुआ। और वाहः—विश्व की बादशाही देने वाले से आठ मास तक मिलने नही आये हो।वण्डर है नां।विदाई